

3,2604.2684.16757. नाभिज्ञानाति मे — शास्त्रगतं मनः BBNF. Chr. 13, 5. अरुमत्तेष्वभिज्ञातः पृथिव्यामपि । हृदयज्ञः *bekannt als MBh. 2, 1763.* मा-
मभिज्ञानाति — मिथ्याप्रलापिनम् *halten für 1, 3337.* — 2) *anerkennen, guthissen, einräumen, zugeben:* यदन्नं नाभिज्ञानाति यद्देख्यं नाभिनन्दति
तत्सर्वं वर्ज्याम्यहम् MBh. 13, 5871. प्रुभं वा यदि वा पापं येन वाक्यमुदीरि-
तम् । सत्यमित्यभिज्ञानाति स लोके पुरुषोत्तमः ॥ R. 4, 30, 12. एवमुक्तस्तु
राज्ञा स तथ्यमित्यभिज्ञानवान् MBh. 1, 3420. न पुत्रमभिज्ञानामि त्वयि ज्ञा-
तम् *ich erkenne das von dir geborene Kind nicht als meinen Sohn an*
3060. — 3) *sich erinnern dass;* mit blosser fut. st. des imperf., oder
mit यद् und imperf.; wenn die Erinnerung sich auf zwei mit einander
in Verbindung stehende Ereignisse erstreckt, kann sowohl mit als ohne
यद् imperf. oder fut. stehen. P. 3, 2, 112 — 114. अभिज्ञानाति देवदत्त का-
ष्मीरिषु वत्स्यामः । अभिज्ञानाति देवदत्त यत्काष्मीरिषु वत्स्यामः । अभिज्ञाना-
ति देवदत्त (यत्) काष्मीरिषु वत्स्यामस्तत्रैदं भोक्त्यामेहे (oder अत्रसाम
und अनुष्मन्ति) Sch. संभविष्याव एकस्यामभिज्ञानाति मातरि BHATT. 6, 138.
अवसाव नग्नेषु यत्पास्यावो मर्धून च । अभिज्ञानीहि तत्सर्वम् 139. —
Vgl. अभिज्ञा fg.

— प्रत्यभि 1) *wiedererkennen, erkennen, ael. HARIV. 9992. PRAB. 24, 16. SADDH. P. 4, 13, b. med. MBh. 5, 7258. °ज्ञाय 1, 5441. MBh. 134, 4. HIT. 14, 21. KATHAS. 5, 107. 8, 29. 10, 176. °ज्ञायमानत् Sch. zu KAP. 1, 64. °ज्ञात MBh. 5, 4078. 6079. ÇĀK. 107, 2. KATHAS. 4, 81. °ज्ञातवान् 10, 175. — 2) *wieder zusichkommen, die Besinnung wieder erhalten:* किं-
चित्प्रत्यभिज्ञानतीम् KATHAS. 18, 175. — Vgl. प्रत्यभिज्ञान.*

— समाभि *erkennen:* इन्द्रसेनो सरु धात्रा समाभिज्ञाय MBh. 3, 2945.

— अत्र *geringachten, verachten:* अत्रज्ञानति (Gegens. भ्रजति) मी मूला
मानुषीं तनुमाश्रितम् BHAG. 9, 11. कश्चिन्नो नावज्ञानति याज्ञकाः पतिते य-
था MBh. 2, 179. 3, 8853. HARIV. 7095. RAGH. 1, 77. BHĀG. P. 4, 14, 24.
°ज्ञाय MBh. 3, 4037. R. 1, 14, 22. 3, 42, 38. HIT. II, 94. °ज्ञातुम् PAÑĀT. I,
110. पुत्रो ऽप्यवज्ञायते III, 195. तयावज्ञते BHATT. 3, 8. अत्रज्ञानाति मे ते-
ज्ञः R. 1, 76, 3. अत्रज्ञायिते तो वाचम् MBh. 3, 17273. अत्रज्ञात AK. 3, 2, 56.
H. 1479. BHĀG. P. 1, 14, 39. 18, 28. अत्रज्ञाता भविष्यामि बान्धवानाम्
MBh. 5, 6033. 13, 3869. अत्रज्ञाता च लोकेषु 1, 6161. यदानमपत्तेभ्यश्च दी-
यते । अस्तकृतमयज्ञातं ततामसमुदाहृतम् *eine Gabe, bei der man eine*
Geringachtung an den Tag legt, BHAG. 17, 22. — Vgl. अत्रज्ञा fg., अ-
वज्ञेय.

— आ *merken auf, bemerken, inne werden, kennen, verstehen:* तदा जी-
नीतिता पुष्यता वचः ॥ V. 4, 94, 8. मनो ह वै देवा मनुष्यस्याज्ञानति ÇAT. Br. 2,
1, 4, 1. नो हि मनसा ध्यायतः कश्चनज्ञानाति 4, 6, 3, 5. तद्वापमृषिराज्ञो 1,
5, 9, 1, 1, 1, 7. आज्ञिज्ञासेन्याभिरेवाप्रियं भ्रसृव्यमाज्ञापयैमतिरिति AIR.
Br. 6, 33 (SĀ.: = अत्रज्ञो कृत्य, eine sonst nicht zu belegende Bed.;
vgl. आज्ञिज्ञासेन्य). अज्ञानान् AV. 6, 119, 3. ग्राम्याणां पशूनां वाच आज्ञा-
नाति *versteht PAÑĀT. Br. 10, 2. — तदाज्ञाय पतीनामनपेक्षताम् BHĀG.*
*P. 1, 13, 50. तं विषीदत्तमाज्ञाय रात्तसम् *bemerkten, dass* MBh. 3, 448. R.*
*2, 69, 3. 78, 13. कलिमागतमाज्ञाय BHĀG. P. 1, 1, 21. *erfahren, vernehmen,**
hören BHĀG. P. 9, 8, 4. शक्रस्य मतमाज्ञाय INDR. 3, 1. तस्य स्वरमाज्ञाय R.
3, 64, 3. धातुर्वचनमाज्ञाय MBh. 1, 5940. 3, 1431. R. 1, 9, 61. 2, 78, 10. शा-
सनमाज्ञाय धातुः 32, 1. 34, 12. न जगाम तयोक्तो ऽपि धातुराज्ञाय शासनम्
nachdem er den Befehl des Bruders vernommen, indem er sich nach dem

Befehl des Bruders richtete 3, 51, 8. — आज्ञाज्ञतुः HARIV. 2929 fehlerhaft
für आज्ञामतुः. — Vgl. आज्ञा, आज्ञात, आज्ञान fg., आज्ञापिन, अनाज्ञात.
*— caus. 1) *befehlen, anbefehlen, über Etwas befehlen, Jmd (acc.) anwei-**
sen, an Jmd einen Befehl richten: भृत्यामिति सुच्यक्तं प्रभुराज्ञापयिष्य-
ति R. 5, 23, 18. 4, 24, 24. अन्यथा न तु यष्टव्यं वयमाज्ञापयामहे HARIV.
8005. यथाज्ञापयति देवः HIT. 92, 1. ÇĀK. 61, 14, v. 1. DAÇAK. in BBNF.
Chr. 188, 8. यथाज्ञापयसे MBh. 2, 2567. किमाज्ञापयति ÇĀK. 28, 12. य-
दाज्ञापयति भगवान् 112, 17. 7, 22. 61, 14. HIT. 98, 21. R. 2, 52, 23. 3.
18, 11. योगमाज्ञापयं तत्र जनस्य HARIV. 9704. यात्राम् R. 2, 82, 21.
घोषणाम् PAÑĀT. 261, 8. सदृशं कुलसंबन्धं यदाज्ञापयथः स्वयम् R. 1,
72, 10. किमाज्ञापयसे MBh. 3, 1836. आज्ञापयधमिष्टानि 18025. आज्ञासुम्
R. 4, 40, 8. सर्वमाज्ञापयतामाशु MBh. 13, 1430. तं ह चिरं वसेत्याज्ञापयो
चकार KHĀND. UP. 5, 3, 7. आज्ञापयतु मी गुरुः MBh. 1, 5265. 2, 1008. R.
1, 66, 3. 4, 24, 19. सेनाम् MBh. 1, 7652. स्फोटं राष्ट्रम् — नित्यमाज्ञापयन्भा-
सि दिवि देवेश्वरो यथा 2, 1800. हृष्टमाज्ञापयस्व च R. 5, 22, 24. आज्ञापयि-
तुम् 4, 19, 23. 40, 7. आज्ञापित R. 2, 82, 30. ÇĀK. Ch. 79, 2. आज्ञात M. 2,
245. R. 5, 56, 134. ÇĀK. 50, 7. DEV. 6, 5. पितृनाज्ञापयिष्यति पुत्राः कर्मणि
HARIV. 11195. तथा तथा विधानाय स्वयमाज्ञापयस्व माम् MBh. 1, 5316.
आज्ञापय मी स्वगृह्य हेसि मे nach Hause gehen PAÑĀT. 242, 24.
मी दृष्ट्वा वधयाज्ञापयिष्यति *er wird den Befehl ertheilen mich zu tödten*
R. 5, 1, 79. आज्ञापितं मामशने MBh. 1, 6310. — 2) *versichern, betheuern:*
n किंचिद्स्या वृजिनमहमाज्ञापयामि ते R. 6, 103, 10. — Vgl. आज्ञति, आ-
ज्ञाप्य. — desid. s. आज्ञिज्ञासेन्य.

— अत्र्या s. अत्र्याज्ञाय.

— समा *erkennen, kennen lernen, bemerken:* अभिप्रायं समाज्ञाय MBh.
4, 1736. भावच्छन्दं समाज्ञाय 13, 1422. मृतसंज्ञोवनी विद्या मया समाज्ञाता
VET. 18, 13. 12. ते समाज्ञाय संप्राप्तं यज्ञियं तुरगोत्तमम् MBh. 14, 2142. म-
हार्थः समाज्ञातः *bekannt als grosser Held 3, 680. समाज्ञातानुद्धिमतः प्र-*
तिरूपान्वशे स्थितान् 13, 2214. महार्थसमाज्ञात (vgl. gaṇa कृतादि zu P.
2, 1, 59) als grosser Held bekannt 14, 2141. बाहुयुद्धम् — क्रियाबलसमा-
ज्ञातम् bei dem Gewandtheit und Kraft erkannt werden HARIV. 4697. —
*Vgl. समाज्ञा. — caus. *befehlen, anbefehlen, Jmd (acc.) anweisen, Jmd ei-**
nen Befehl ertheilen: राष्ट्रियः समाज्ञापयति MBh. 66, 23. योगं समाज्ञा-
पय मे बलानाम् R. 2, 82, 29. अत्र्या यात्रा समाज्ञता राधवस्य निवर्तने 23.
वधे तस्य समाज्ञते रावणेन 5, 48, 1. संमार्शनोपलेपनमपडनादिकं कर्म समा-
ज्ञापयति PAÑĀT. 116, 21. विवाहम् — समाज्ञापयत MBh. 5, 6072. त्वाम्
— समाज्ञापयति HIT. 93, 5. मी समाज्ञापयस्व च R. 6, 21, 37. ततः समाज्ञा-
पयद्राशु सर्वानानापिनस्तद्विचये RAGH. 16, 75. कसेनापि समाज्ञतथापूरः पू-
र्वमेव तु । योद्धव्यं सरु कृत्वेन त्वया यत्नवतेति वै ॥ HARIV. 4694. 8845.
11307. दाःस्थेन च समाज्ञतः प्रविवेश गृहेतमम् 15051.

— उप *med. *ersinnen, ausfindig machen, auf Etwas verfallen:* न पा-*
पमयं जानते AV. 4, 36, 8. उप तज्जानीत यथा-व्यमिह्याप्यसामेति ते ऽब्रुव-
श्चेतयधमिति ÇAT. Br. 6, 2, 3, 7. 8, 3, 1. 8, 2, 2. 1, 6, 4, 7. 4, 2, 1, 6. शश्वदै-
तदारुणिनाधुनोपज्ञातम् 3, 3, 4, 19. उप तं यज्ञक्रतुं जानीत य उर्ध्वस्तोगः
12, 2, 3, 9. 3, 3, 5. उपज्ञात P. 4, 3, 115. = विनोपदेशेन ज्ञातम् Sch. — Vgl.
*उपज्ञा. — desid. *ausfindig zu machen suchen (?)* MBh. 13, 3016 — Vgl.*
उपज्ञिज्ञाय.

— समुप *ersinnen, ausfindig machen:* स्वयं समुपज्ञानन्कि पौरज्ञानपदा-